Lecture - 101.

सविनय अवज्ञा आंदोलन में बिहार की भूमिका

— Mamta Rani
Guest Assist. Prof.
SNSRKS College.
Saharsa.
Deptt of History.
BA Part - IIIrd

गया। इस ऐतिहासिक अधिवेशन में पहली बार पूर्ण स्वराज का लक्ष्य घोषित किया गया और 26 जनवरी को स्वतंत्रता दिवस मनाने का संकल्प भी लिया गया। इसी अधिवेशन में सविनय अवज्ञा आन्दोलन चलाने का प्रस्ताव भी लाया गया। गाँधी जी ने 11 सूत्री माँग अंग्रेजों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए समझौता के लिए अंतिम प्रयास किया जिसपर अंग्रेजी सरकार ने ध्यान नहीं दिया। परिणामस्वरूप गाँधी जी के नेतृत्व में असहयोग आन्दोलन शुरू किया गया।

असहयोग आन्दोलन के अन्तर्गत जो कार्यक्रम निर्धारित किया गया था उसी को इस आन्दोलन में भी अपनाया गया जिसमें नमक कानून का उल्लंघन अलग से शामिल कर लिया गया। बिहार में रचनात्मक एवं नकारात्मक दोनों तरह के कार्यक्रम को आमलोगों ने अपनाते हुए इस आन्दोलन में मुख्य भूमिका निभाया।

12 मार्च 1930 को गाँधी जी ने साबरमती से डांडी यात्रा प्रारंभ किया और 6 अप्रैल 1930 को डांडी पहुँचकर नमक कानून का उल्लंघन करते हुए आन्दोलन शुरू किए। इसका प्रभाव भारत के विभिन्न क्षेत्रों पर पड़ा जिसमें बिहार भी शामिल था। बिहार में इस आन्दोलन का सर्वप्रमुख नेता डॉ० राजेन्द्र प्रसाद थे और ब्रजकिशोर प्रसाद इसी सहयोगी के रूप में भूमिका निभाया। बिहार में सर्वप्रथम सारण जिला में नमकीन मिट्टी से नमक बनाकर इस आन्दोलन की शुरुआत किया गया। सारण के साथ साथ यह आन्दोलन मुजफ्फरपुर, चम्पारण, भागलपुर, गया और मुंगेर आदि क्षेत्रों में फैल गया। सबसे सक्रिय रूप में भागलपुर के लोगों ने इस आन्दोलन में भूमिका निभाया। इसका जेल के कैदियों ने विदेशी वस्त्र पहनने से इंकार करते हुए वस्त्र विहीन रहने का निश्चय किया जिसे इतिहास में नंगा बड़तास कहा गया। इस आन्दोलन की एक प्रमुख विशेषता लड़ी के वृक्ष को काटकर लोगों ने सरकार का विरोध किया। बिहार के अधिकांश क्षेत्रों में चौकीदारी कर नहीं देने का आन्दोलन चलाकर गाँधी जी का साथ दिया गया।

अंग्रेज सरकार ने इस आन्दोलन को कुचलने के लिए सभी प्रकार के चालों का प्रयोग किया। 5 मार्च 1931 में गाँधी इरविन समझौता के बाद इस आन्दोलन को स्थगित किया

गया। लेकिन 2nd गोलमेज सम्मेलन से खाली हाथ वापस आने पर गाँधी जी ने दुबारा आन्दोलन शुरू किया जो उतना सफल नहीं हुआ। भले ही यह आन्दोलन असफल हो गया पर इसमें महिलाओं की भागीदारी, हिन्दु-मुस्लिम एकता जैसे मज़बुत पक्ष निकलकर सामने आया साथ ही भारत छोड़ो आन्दोलन का मार्ग भी प्रशस्त हुआ।

*** *** ***

8. सविनय अवज्ञा आन्दोलन में बिहार की भूमिका का वर्णन कीजिए।

उत्तर:- सविनय अवज्ञा आन्दोलन

कारण

* साइमन आयोग की असफलता (1928)
* नेहरू रिपोर्ट की विफलता (1928)
* लाहौर अधिवेशन (1929)
* गाँधी जी की 11-सूत्री माँग

कार्यक्रम

* रचनात्मक या सकारात्मक
* नकारात्मक

प्रारंभ एवं विकास

* 12 मार्च 1930

↓

6 अप्रैल 1930

डॉ० राजेन्द्र प्रसाद, ब्रजकिशोर प्रसाद

सारण

छपरा - कैदी का नंगा हड़ताल

* चौकीदारी कर नहीं देना
* ताड़ी के वृक्ष की कटाई

परिणाम:- गाँधी-इरविन समझौता (1931) 1934 में पूर्ण रूप से समाप्त

असहयोग आन्दोलन की असफलता के बाद भारत में क्रांतिकारी आन्दोलन की पुनः शुरुआत हो गया था। भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में अब वामपंथी एवं समाजवादियों का वर्चस्व बढ़ने लगा था। इसी परिपेक्ष में सविनय अवज्ञा आन्दोलन को शुरु किया गया जिसके कुछ निम्नलिखित कारण है:-

साइमन आयोग 1928 में भारत पहुँचा जिसमें कोई भी भारतीय शामिल नहीं थे इसलिए इसका विरोध किया गया और इसके रिपोर्ट को कांग्रेस ने मानने से इंकार कर दिया औ आन्दोलन का एक कारण बना।

संविधान निर्माण से संबंधित मोती लाल नेहरू की अध्यक्षता में जिस रिपोर्ट को प्रस्तुत किया गया इसमें पहला लक्ष्य द्वैत शासन एवं दूसरा पूर्ण स्वराज को घोषित किया गया जिसे बहुत बड़ी भूल माना गया है कांग्रेस ने इसे मानने से इंकार कर दिया और लाहौर में अधिवेशन बुला